विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान की एक अनुपम भेंट
A Unique Gift For International Unity and Development & Quick Evolution of Human Consciousness

अखण्ड भारत सन्देश
Akhand Bharat Sandesh

पाक्षिक(Fortnightly) हिन्दी/English

वर्ष 14 * अंक 13 * विक्रम सम्वत् 2070 * शाके 1935 * आरोही द्वापर युग का 314 वाँ वर्ष * 16 - 28 Qjojh, 2014 * मूल्य :10.00

True Politics V

सच्ची राजनीति V

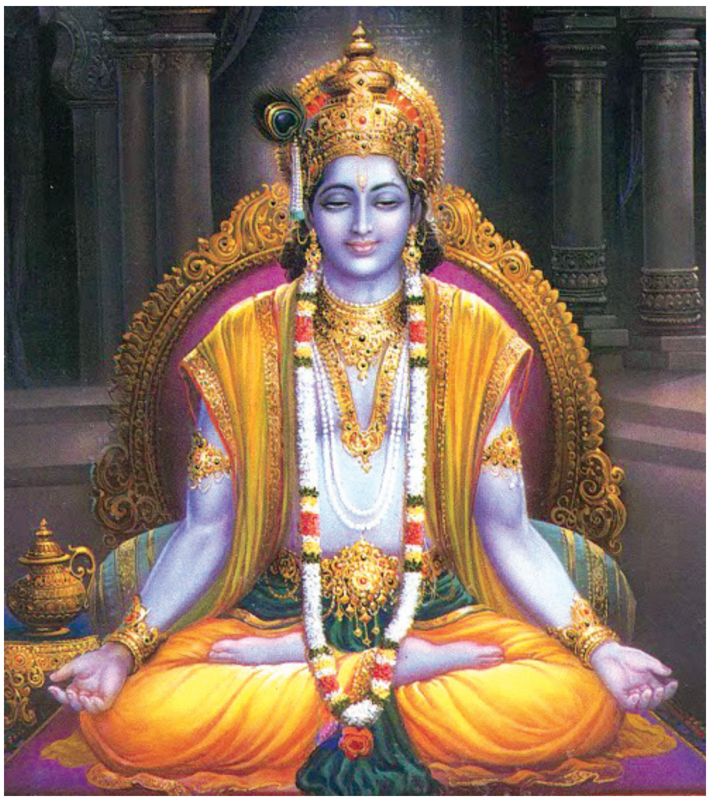

The general understanding is that politics and politicians are designated for the development and all-round welfare of citizens and inhabitants of the nation. India is the largest democratic spiritual nation and has a strong foundation of true thought and vitality of politics and politicians because India has possessed the most highly evolved humans in every generation. A number of Avatars and Realized Masters are incarnated in India in each century and because of this India has demonstrated the most worthy lifestyle to answer all questions and to solve all problems of all creations of Cosmos.

In the present ascending Dwapara Yuga, Kriyayoga, a complete education, has incarnated through Yogavatar Lahiri Mahasaya in India, to bring unity among all human beings of all countries of the world and to heal their illness and sickness of body and mind through spiritual powers. Kriyayoga is primarily meant to accelerate the understanding power of human beings quickly. One unit of Kriyayoga is practised in about half a minute and

continued on Page 2...

jkजनेता व राजनीति के साथ राष्ट्र के नागरिक व राष्ट्र में रहने वाले सभी जीव–जन्तुओं, वनस्पतियों व अन्य प्राकृतिक सम्पदाओं के संरक्षण, सुरक्षा व विकास का कार्यक्रम जुड़ा होता है। पूरे विश्व में भारत सबसे बड़ा आध्यात्मिक लोकतांत्रिक राष्ट्र है। भारत की राजनैतिक नींव आध्यात्मिक शक्ति से संरक्षित है। यही वजह है कि समय के बदलाव में अनेक राष्ट्रों की सभ्यताएँ मिट गयीं लेकिन भारत की भारतीयता आज भी जागृत है। भारत भूमि पर सबसे अधिक संख्या में अवतारों और सिद्धजनों का जन्म हुआ है। ऐसे सिद्धजनों ने ही हर पीढ़ी में भारत को प्राचीन मिश्र एवं बेबीलोन के समान दुर्गति को प्राप्त होने से बचाया है। जीवन जीने की पूर्ण व उच्चतम् जीवनशैली को अपनाकर जीवन लक्ष्य को पाने के लिए प्रत्येक शताब्दी में आत्मज्ञानी मानव जन्म लेकर लोगों का मार्गदर्शन करते रहे हैं।

वर्तमान आरोही द्वापर युग में क्रियायोग सर्वज्ञ तत्व के रूप में योगावतार श्री लाहिड़ी महाशय जी के माध्यम से भारत देश में अवतरित हुआ। क्रियायोग के द्वारा विश्व के सभी राष्ट्र एक दूसरे से सत्य व अहिंसा की अलौकिक शक्ति से जुड़ सकेंगे और मनुष्य अपने समस्त शारीरिक और मानसिक बीमारियों को दूर कर सकेगा। क्रियायोग के अभ्यास से मनुष्य में समझने की सामर्थ्य का द्रुत गति से विकास होता है। 50 मिनट में की गयी 100 क्रियाओं का अभ्यास योगी में एक दिन में नैसर्गिक 100 वर्ष के समतुल्य विकास लाती हैं। इस तरह मनुष्य 50 मिनट

-शेष पृष्ठ 2 पर

Pg 3
The Cause of Downfall of the Nation
राष्ट्र के दुर्गति का कारण

Pg 4 - 7
Ten Commandments & Ten Principles of Yoga Are The Same
योग विज्ञान के दस नियम व बालबिल में दिया हुआ The Ten Commandments एक ही भाव को प्रकट करता है।

Pg 8 - 10
Quality of King of Nation
राष्ट्र के राजा का गुण

Pg 12
Prophecy of Mahavatar Babaji under Blessed Banyan Tree at Allahabad

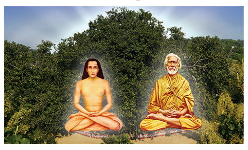

A number of Avatars and Realized Masters are incarnated in each century and because of this India has demonstrated the most worthy lifestyle to answer all questions and to solve all problems of all creations of Cosmos.

increases understanding power which one could get in one year of disease-less life. Therefore, to attain an increase in understanding power equivalent to one hundred years, it takes fifty minutes of practice of Kriyayoga.

In the present time, we need a more advanced understanding power to cope with the present fast-moving scientific life. Therefore, Kriyayoga practice is most necessary for all humans who want a healthy and peaceful life.

In the present time, we need a higher understanding to cope with the present fast-moving scientific life. Therefore, Kriyayoga practice is most necessary for all humans who want a healthy and peaceful life.

प्रत्येक शताब्दी में सिद्धजन भारत में अवतार लेते रहते हैं। इसी कारण भारत जीवन जीने की उच्चतम् शैली का प्रदर्शन करता रहा है। इस जीवनशैली पर चलकर मनुष्य सभी प्रकार के प्रश्नों का सम्यक् उत्तर पाने के साथ–साथ ब्रह्माण्ड की सभी रचनाओं की समस्याओं को दूर कर सका है।

क्रियायोग के अभ्यास से समझने की सामर्थ्य का व्यापक विस्तार कर लेता है जिसे पाने के लिए व्याधिरहित 100 वर्ष लगते हैं। वर्तमान वैज्ञानिक युग में समय के साथ–साथ आगे बढ़ने के लिए समझने व बूझने की उच्च शक्ति आवश्यक है। इसलिए स्वस्थ एवं शांतिमय जीवन के लिए क्रियायोग का अभ्यास आवश्यक अनुशासन है।

सिद्धजनों द्वारा लिखे गये सद्ग्रंथ घोषणा करते हैं कि जिस देश में दस सिद्धजन होंगे वह देश विनाश होने से बच सकेगा। इसी वजह से भारतीय सभ्यता आज तक सुरक्षित है।

वर्तमान वैज्ञानिक युग में समय के साथ–साथ आगे बढ़ने के लिए समझने व बूझने की उच्च शक्ति आवश्यक है। इसलिए स्वस्थ एवं शांतिमय जीवन के लिए क्रियायोग का अभ्यास आवश्यक अनुशासन है।

Kriyayoga Practice Necessary during the present fast-moving scientific life

Scriptures claim that a nation can be saved from destruction and suffering by ten noble and righteous persons. Kriyayoga has sufficient potential to establish this atmosphere. Now, the time has come for India to

सैकड़ों वर्ष की गुलामी के बावजूद भी भारतीय सभ्यता नष्ट होने से बच गयी। भारतवर्ष में क्रियायोग सर्वज्ञ तत्व के रूप में अवतरित होने से अब भारत में पुनः रामराज्य की स्थापना होगी, भारतीय वातावरण से अज्ञानता दूर हो सकेगी।

-शेष पृष्ठ 3 पर

Kriyayoga Practice during Mela 2014

once again establish and rejuvenate the “Royal Golden Path” which will remove all ignorance from the face of humanity. Kriyayoga is the Omnipotent, perfect tool which promises to awaken the nation quickly.

Kriyayoga is the Omnipotent, perfect tool which promises to awaken the nation quickly.

The nation’s truest wealth is spiritual knowledge which is a storehouse of true ideas, thoughts and concepts in all walks of activities. The nation’s gross structure should be infused with spirituality. India never lost its spiritual wealth which kept Indian Heritage alive in all centuries. Other civilizations, such as the Egyptian, Babylonian, etc., lost their existence due to lack of spirituality.

The Cause of Downfall of the Nation

At the present time, the majority of politicians are working solely to amass wealth to provide for their unnecessary luxuries. Most of the time, such politicians are busy in making their family members MLAs (Members of Legislative Assembly) and MPs (Members of Parliament) and designating them the various posts of Cabinet and State Ministers. Whenever, any person works for money, name and

क्रियायोग सर्वशक्तिमान साधन के रूप में राष्ट्र को शीघ्रता से जागृत करने के लिए सरलतम् ध्यान प्रविधि है। किसी भी राष्ट्र का सच्चा धन आध्यात्मिक ज्ञान है, जिसके अंदर राष्ट्र के

क्रियायोग सर्वशक्तिमान साधन के रूप में राष्ट्र को शीघ्रता से जागृत करने के लिए सरलतम् ध्यान प्रविधि है।

विकास से सम्बन्धित सभी योजनाओं के लिए सद्भावना, सद्विचार व सच्ची धारणा निहित होती है। राष्ट्र का दृश्य रूप आध्यात्मिकता से परिपूर्ण होना चाहिए। इस स्थिति में राष्ट्र की राष्ट्रीयता सुरक्षित रहती है। भारतीय सभ्यता आज तक सुरक्षित है। मिश्र और बेबीलोन की सभ्यताएँ आध्यात्मिक शक्तियों के अभाव के कारण नष्ट हो गयी हैं।

राष्ट्र के दुर्गति का कारण :

वर्तमान समय में राजनीति को राजनीतिज्ञ लोग व्यापार बना लिये हैं। राजनीति के विभिन्न पदों पर आवश्यकता से कहीं अधिक सम्पत्तियों को इकट्ठा करने में लग गये हैं और राजनीतिज्ञों में धारणा बन गयी है कि पैसे के बल पर शासक बना जा सकता है और शासक बन कर अपनी सभी इच्छाओं की आसानी से पूर्ति कर सकते हैं। इस व्यवहार के कारण राजनीतिक पदों पर रह रहे अधिकांश लोग काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद् के वश में होकर शासन की शक्ति का सहारा लेकर जाने अनजाने में अमानवीय, अनैतिक व अराष्ट्रीय कर्म कर रहे हैं। ऐसे लोगों में स्वास्थ्य और

-शेष पृष्ठ 4 पर

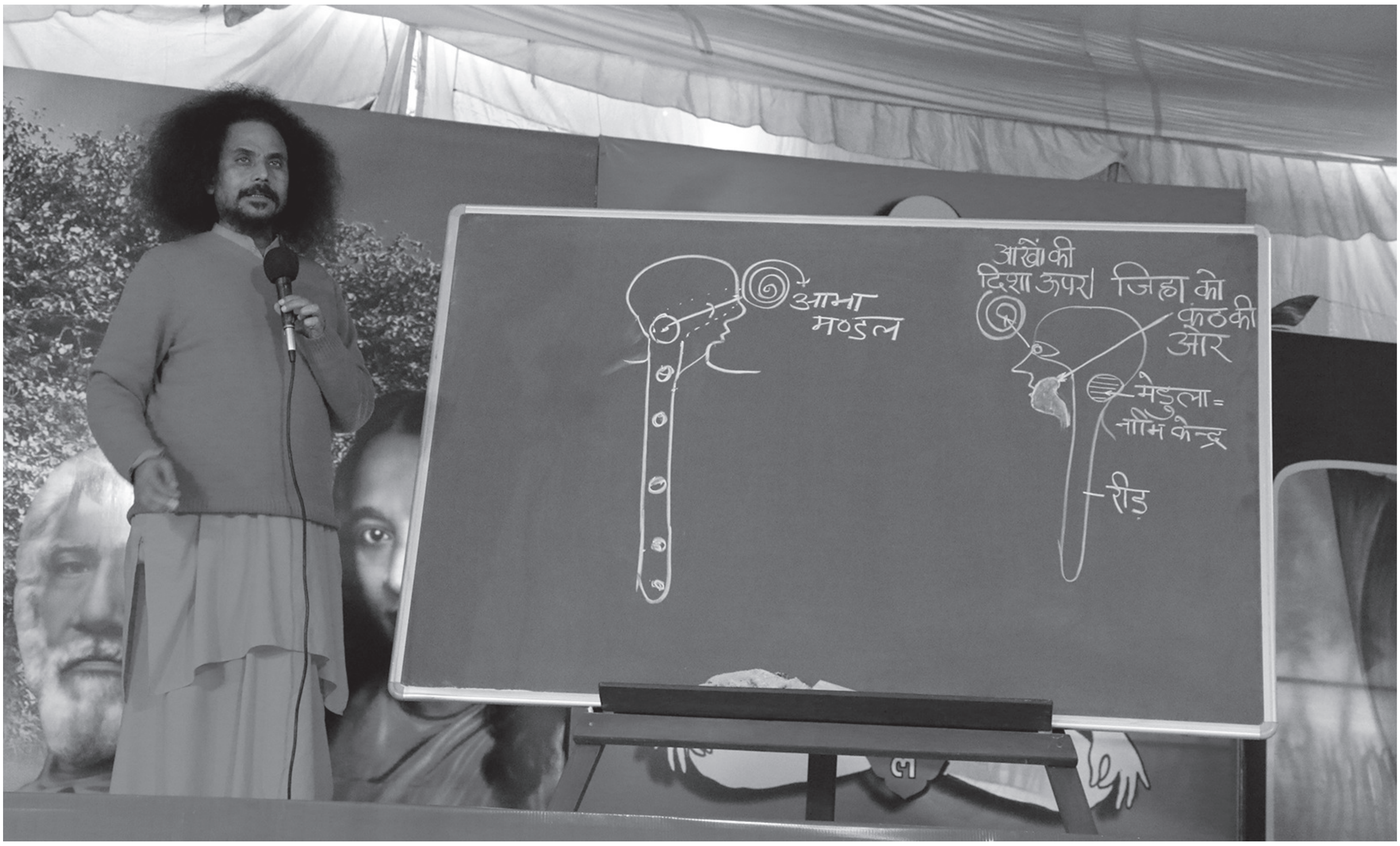

fame, their understanding power becomes cloudy and dull and they have no real thoughts and ideas to keep the nation in a good condition. Such persons destroy their personal health and peace and their activities increase poverty in the nation.

All politicians should strictly observe the Ten Commandments as given below:

The Ten Commandments

1. No person should have any work except for seeking and experiencing Truth behind each name and form.

2. Politicians should practice the philosophy that no one is above or below. All are equally great and important.

3. Politicians should get their power, strength and knowledge from the sphere of Truth and Non-violence.

4. Politicians should observe deep silence once a week to charge their body and mind with the Omnipresent power of Truth and Non-violence.

शांति का शीघ्रता से ह्रास हो रहा है और उनके विभिन्न क्रियाकलापों से राष्ट्र कमजोर हो रहा है।

सभी राजनीतिज्ञों को अधोलिखित दस प्रमुख नियमों का सख्ती से पालन करना चाहिए :

n l fu;ekoyh

1. नाम और आकार के पीछे सच की खोज करना सभी राजनीतिज्ञ व्यक्तियों का एकमात्र लक्ष्य होना चाहिए।

2. ईश्वर (परमात्मा) ब्रह्माण्ड की सभी रचनाओं के रूप में स्वयं प्रकट हो रहे हैं, सभी रचनाओं का महत्व बराबर है, कोई छोटा–बड़ा नहीं है, इस सिद्धान्त को राजनीति के पद पर विराजमान सभी व्यक्तियों को अपनाना चाहिए।

3. सभी राजनीतिज्ञ लोगों को शारीरिक व मानसिक शक्ति को अपने अंदर निहित सत्य व अहिंसा के अनन्त श्रोत से निरन्तर संयुक्त रखना चाहिए।

4. सभी राजनीतिज्ञों को सप्ताह में एक दिन मौन रहकर अपने स्वरूप को सत्य व अहिंसा की शक्ति से चार्ज कर लेना चाहिए।

5. सभी राजनीतिज्ञों को अपने माता–पिता का सम्मान

–शेष पृष्ठ 5 पर

5. Politicians should honour, serve and worship their father and mother.

6. Politicians should never kill animals nor cut immature green plants.

7. Politicians should not commit adultery.

8. Politicians should not steal.

9. Politicians should not bear false witnesses to prove their wrongful activities.

10. Politicians should not covet their neighbour's house. They shall not covet their neighbour's wife, nor his manservant, nor his maidservant, nor his ox, nor his ass, nor any thing that is their neighbour's.

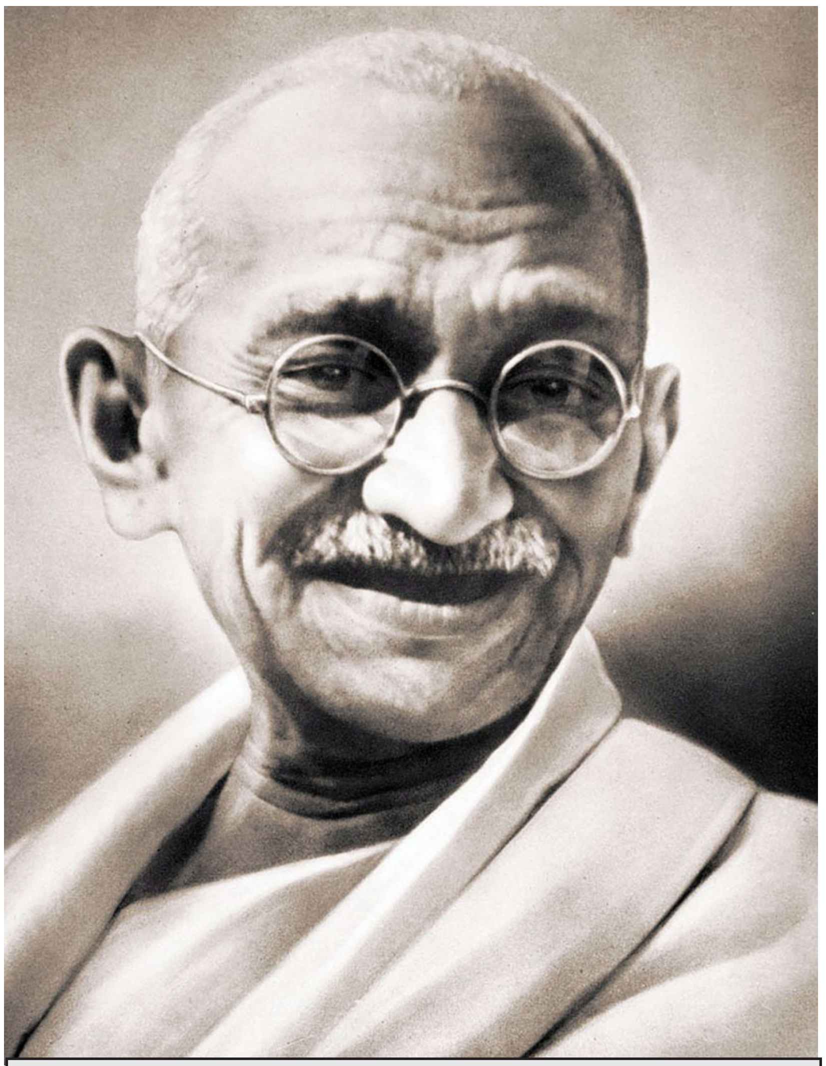

Prophet Mahatma Gandhi - a dedicated follower of Ten Commandments

सेवा और पूजा–अर्चना करना चाहिए।

6. राजनीतिज्ञों को सत्य व अहिंसा के नियमों का पालन करना चाहिए। किसी भी जानवर को मारना व हरे पेड़ पौधों को काटने से सम्बन्धित क्रियाकलापों से सदैव दूर रहना चाहिए।

7. राजनीतिज्ञों को व्यभिचार और परस्त्रीगमन से दूर रहना चाहिए।

8. राजनीतिज्ञों को अस्तेय (अचौर्य) व अपरिग्रह (असंचय) व्रत का पालन करना चाहिए।

9. राजनीतिज्ञों को गलत कार्यों को सही सिद्ध करने के लिए झूठा शपथपत्र नहीं देना चाहिए।

10. राजनीतिज्ञों को पड़ोसी के मकान, उनकी पत्नी, सेवक, पालतू जानवर आदि के प्रति लालच नहीं करना चाहिए।

Kriyayoga Practice Changes Body and Mind of Politicians and keeps their understanding very high, charged with the Power and Knowledge of The Ten Commandments. Therefore, all politicians should practice Kriyayoga Meditation five times per day. Such politicians are very important people for making a nation great.

क्रियायोग का अभ्यास राजनीतिज्ञों के शरीर व मन को पूरी तरह से बदल देता है। उनके अंदर ईश्वरीय दस नियमों (The Ten Commandments) के पालन की क्षमता प्रकट हो जाती है। उनमें समझने की सामर्थ्य बहुत बढ़ जाती है। प्रत्येक राजनीतिज्ञ व्यक्ति को प्रतिदिन पॉच बार क्रियायोग का अभ्यास करना चाहिए और ऐसे लोग ही राष्ट्र को बहुमुखी विकास प्रदान करने में सफल होते हैं।

-शेष पृष्ठ 6 पर

The Ten Great Principles Versus The Ten Great Principles of The Science of Yoga

योग विज्ञान के दस नियम व बालबिल में दिया हुआ The Ten Commandments एक ही भाव को प्रकट करता है।

The ten principles of The Science of Yoga are known as :

1. Truth
2. Ahimsa
3. Brahmaacharaya
4. Asteya
5. Aprarigraha
6. Shaucha
7. Santosh
8. Tapa
9. Swadhyayeh
10. Brahmanidhaanan

All the above ten principles are nothing but the philosophy and principles of the Ten Commandments explained and written in a different style. Anyone who practices Kriyayoga with all devotion and joy realizes that these ten principles of the Science of Yoga are not ten different things. They represent the property of God. They all represent one Consciousness – God. God is Truth, Truth is Ahimsa, Ahimsa is Brahmaacharya, Brahmaacharya is Asteya, Asteya is Aparigraha, Aparigraha is Shaucha, Shaucha is Santosh, Santosh is

योग विज्ञान के दस नियम :

1. सत्य
2. अहिंसा
3. ब्रह्मचर्य
4. अपरिग्रह
5. अस्तेय
6. शौंच
7. संतोष
8. तप
9. स्वाध्याय
10. ब्रह्मनिधानानि

जब कोई भी व्यक्ति क्रियायोग का अभ्यास करके ध्यान की गहराई में उतरता है तो उसे स्पष्ट अनुभव होता है कि बाइबिल में दिये गये Ten Commandments योग विज्ञान में दिये गये दस नियम हैं। इन नियमों में छिपे हुए सत्य का अनुभव करने पर ज्ञात होता है कि ये दसों नियम ईश्वरीय गुणों को व्यक्त करते हैं और ये दस नियम अलग–अलग नहीं हैं बल्कि एक दूसरे के पर्याय हैं। किसी एक का पालन होने पर सबका पालन एक साथ हो जाता है। ईश्वर ही सत्य है, सत्य ही अहिंसा है, अहिंसा ही ब्रह्मचर्य है, ब्रह्मचर्य ही अस्तेय है, अस्तेय ही अपरिग्रह है, अपरिग्रह ही तप है, तप ही

-शेष पृष्ठ 7 पर

Kriyayoga practitioners practising Spinal Recharging by placing palms on *medulla* - point at the posterior surface of head

Kriyayoga Practice - Recharging Brain and Spinal Cord

Tapa, Tapa is Swadhyayeh and Swadhyayeh is Brahma-Consciousness.

In the same way, the Ten Commandments are related to the nature of God. If one attains the quality of one Commandment, one is able to realize the ultimate Truth that the Ten Commandments and the ten principles of Science of Yoga represent the same thing — the property of God. The moment we are unable to experience this Truth, we cannot bring peace within our own body Kingdom, let alone within the nation.

Kriyayoga Meditation

Kriyayoga Meditation is the scientific practice of devoted concentration on Self to realize that all organs, cells-tissues and various changes experienced in the body are One; because of the effect of Maya, they appear to be different. The “experience of many” represents the illusionary nature of God and is popularly known as “dream of God”. In traditional Hindi language, it is known as “*Prabhu ki leela*”. Common people do not realize this Truth and because of this they suffer from all problems of body and mind.

स्वाध्याय है, स्वाध्याय ही ईश्वर की अनुभूति है।

इसी तरह दस कमान्डमेन्ट में किसी एक नियम को आत्मसात् कर लेने पर अनुभव होता है कि सभी नियमों का पालन स्वतः हो जाता है। जब तक राजनीतिज्ञों को इस सत्य की अनुभूति नहीं होगी तब तक वह राष्ट्र की सच्ची सेवा नहीं कर सकेंगे। क्रियायोग ध्यान से मनुष्य योग के दस नियमों और बाइबिल के Ten Commandments को आसानी से अपना लेता है।

क्रियायोग ध्यान

क्रियायोग ध्यान में मनुष्य अपने स्वरूप में एकाग्रता बढ़ाकर अनुभव करता है कि शरीर के सभी अंग, शरीर की सभी कोशिकाएँ और शरीर में होने वाले सभी परिवर्तन एक ही परम तत्व है। माया के प्रभाव से शरीर के भिन्न–भिन्न अंग व कोशिकाएँ अलग–अलग रचना के रूप में अनुभव होती हैं। इस अनुभूति को ही स्वप्न देखना कहा जाता है। इसी को प्रभु की लीला भी कहते हैं। सामान्य जीवन जीने वाले इसी स्वप्न को सच मान लेते हैं। इस स्थिति में मनुष्य में अनेक प्रकार की शारीरिक और मानसिक बीमारियाँ प्रकट होती हैं। मन व बुद्धि के द्वारा मनुष्य को सत्य की अनुभूति करने में लाखों वर्ष लग जाते

-शेष पृष्ठ 8 पर

TRUE KING OF THE NATION - Conqueror Of All Enemies Within

By using the power of mind and reasoning, we cannot experience essential unity amongst all structures within and around. To experience essential unity among all creation, human beings need intuition. Kriyayoga Meditation is the fastest, highest, greatest and most royal way to awaken the sleeping intuition within.

The head of politicians should perform all their activities through the power of intuition. In this condition, all inhabitants and human beings of the nation enjoy real peace, knowledge and power.

हैं। मनुष्य के शरीर के सभी अंग, अनगिनत कोशिकाएँ व उसमें होने वाले अनगिनत परिवर्तन सभी एक ही परम तत्व के प्रकाश हैं, को अनुभव करने के लिए प्रज्ञा शक्ति (Intuition) की आवश्यकता होती है। क्रियायोग ध्यान (Intuition) प्रकट करने का तीव्रतम्, उच्चतम्, महानतम् व सरलतम् अभ्यास है। सभी राजनीतिज्ञों को प्रज्ञाशक्ति के द्वारा कार्य करना चाहिए। इस स्थिति में राष्ट्र में रह रहे सभी मनुष्य व अन्य सभी रचनाएँ आसानी से सुख व शांति की अनुभूति में जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

To experience essential unity among all creation, human beings need intuition. Kriyayoga Meditation is the fastest, highest, greatest and most royal way to awaken the sleeping intuition within.

ब्रह्माण्ड की सभी रचनाएँ आपस में संयुक्त हैं और एक ही परमतत्व का प्रकाश हैं, का अनुभव करने के लिए मनुष्य को Intuition (प्रज्ञा शक्ति) चाहिए। क्रियायोग ध्यान (Intuition) प्रकट करने का तीव्रतम्, उच्चतम्, महानतम् व सरलतम् अभ्यास है।

Quality of King of Nation

A King should be a conqueror of all enemies present within. The head of these enemies is Ego or “I-Consciousness” – Living in thoughts of limitations brings the realization of a state of hopelessness. This Ego-consciousness visualizes

राष्ट्र के राजा का गुण

अपने अंदर विद्यमान सभी शत्रुओं के विजेता को राजा कहते हैं। सभी शत्रुओं के बादशाह का नाम अहंकार तत्व है जो निरन्तर अनुभव कराता है कि मनुष्य का अस्तित्व सीमित है, उसके परमात्मा के बीच में दूरी है और मृत्यु अन्तिम सत्य है।

-शेष पृष्ठ 9 पर

Six Friends within are known As *Shatsampatti*
अन्तःकरण में छः मित्र षटसम्पत्ति के रूप में

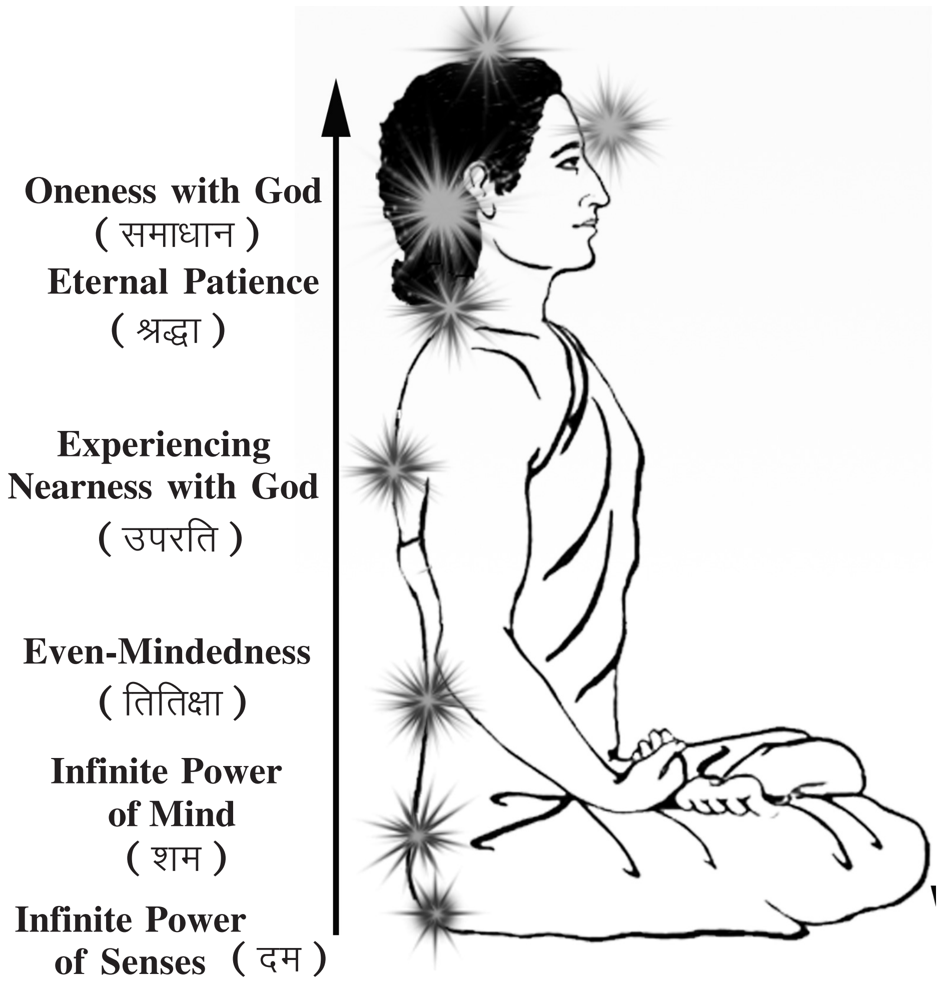

Kriyayoga Meditation brings
UPWARD FLOW OF LIFE-FORCE
awakening virtues (True Friends) within

क्रियायोग ध्यान के आभामण्डल में किये गये क्रियाकलाप से सिर व रीढ़ के अंदर जीवन शक्ति के अन्तर व उर्ध्वगमन से षटसम्पत्ति की उत्पत्ति

Six Enemies within are known As *Khatripu*
अन्तःकरण में छः शत्रु षटरिपु के रूप में

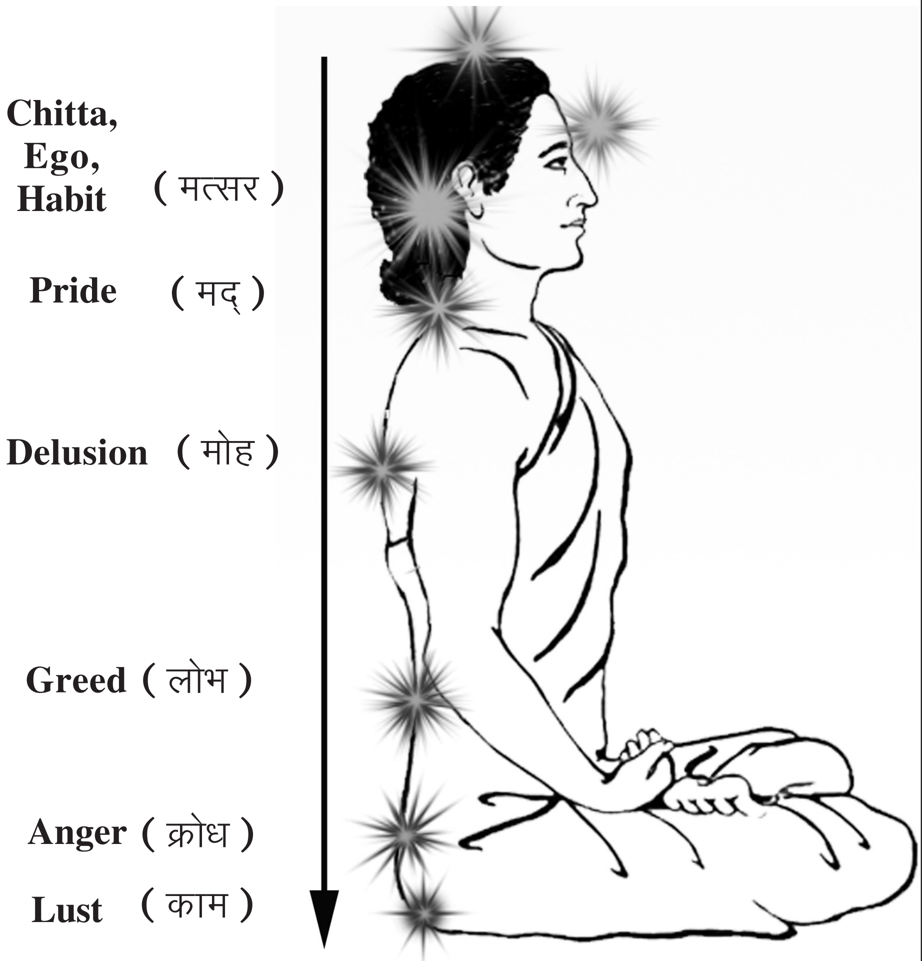

In Day-to-Day Activities without Kriyayoga Meditation, the DOWNWARD & OUTWARD FLOW OF LIFE-FORCE activates the Evil Forces (Enemies) within

क्रियायोग ध्यान के आभामण्डल से अलग होकर किये गये क्रियाकलाप से सिर व रीढ़ के अंदर जीवन शक्ति का अधो व बहिर्गमन से षटरिपु की उत्पत्ति

---

that death is the ultimate truth. Ego-consciousness is the false personality of human beings. Egoistic life always sides with the materialistic forces of creation which are known as enemies of human beings and prevent them from the realization of ultimate truth that each and every human is an Omnipresent Consciousness. The following are six enemies always working for the protection of Ego-Consciousness:

1. Kaama (Lust)
2. Krodha (Anger)
3. Lobha (Greed)
4. Moha (Delusion)
5. Mada (Pride)
6. Matsar (Envy)

Kriyayoga practice transforms all six enemies into six true friends (given on the next page) which brings realization of GOD:

अहंकार तत्व के सहयोग में काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद्, मत्सर शक्तिशाली सेनानी के रूप में सहयोग करते हैं। क्रियायोग ध्यान में अनुभव होता है कि मनुष्य का अस्तित्व ईश्वर शक्ति का प्रकाश है जिसका गुण सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान व अमर तत्व के रूप में है।

मनुष्य के अंदर अहंकार को शक्ति व सुरक्षा प्रदान करने वाली छः प्रमुख शक्तियॉ अधोलिखित हैं –

1. काम
2. क्रोध
3. लोभ
4. मोह
5. मद
6. मत्सर

क्रियायोग के अभ्यास से अहंकार पोषित शत्रुवत् व्यवहार करने वाली छः शक्तियों का रूपान्तरण आसानी से छः मित्रों के रूप में हो जाता है, जो इस प्रकार हैं–

1. दम (इन्द्रियों की अनन्त शक्ति)

-शेष पृष्ठ 10 पर

1. Dama (Infinite Power of Senses)
2. Shama (Infinite Power of Mind)
3. Titiksha (Even-mindedness)
4. Uparati (Experiencing Nearness with God)
5. Shraddha (Eternal Patience)
6. Samadhaan (Oneness with God)

One should have the true concept behind God. God means source of all knowledge, power, peace and joy manifesting in two ways: form and formless. The visible Cosmos represents God with form. The formless existence of God is experienced each and every moment in the form of Consciousness which we realize as vitality, true information, active calmness and ceaseless joy. All politicians should have one aim — to experience the presence of God each and every moment.

All politicians should have one aim — to experience the presence of God each and every moment.

WHO IS GOD? WHAT IS GOD?

The chief principle and philosophy of spirituality is God has become All. In each and every creation, the following properties are present in active or inactive form:

1) Omniscient Consciousness
2) Omnipotent Consciousness
3) Immortal Consciousness
4) Bliss
5) Eternal peace
6) Creator of Everything
7) Preserver of Everything
8) Developer of Everything
9) Is able to manifest in both stages: form and formless

All politicians should experience these characteristics each moment. This is easily possible through the practice of Kriyayoga Meditation.

2. शम (मन की अनन्त शक्ति)
3. तितिक्षा (समत्व)
4. उपरति (ईश्वर की निकटतम् अनुभूति)
5. श्रद्धा (अनन्त विनम्रता व अनन्त धैर्य)
6. समाधान (ईश्वर से दूरी की शून्यता की अनुभूति)

मनुष्य को ईश्वर के विषय में सच्ची धारणा होनी चाहिए। ईश्वर का अभिप्राय ज्ञान, शक्ति, शांति, आनन्द का अनन्त श्रोत। ईश्वर की अभिव्यक्ति साकार व निराकार दो तरह से की जाती है। निराकार के रूप में ईश्वर की अनुभूति हम अपने अंदर विद्यमान जीवन शक्ति, शांति, ज्ञान, सद्विचार व सद्भावना के रूप में करते हैं। मनुष्य व अन्य रचनाओं का दृश्य रूप ईश्वर का साकार रूप है। सभी राजनीतिज्ञों को प्रतिपल ईश्वर की अनुभूति में रहकर सभी कर्मों का संपादन करना चाहिए।

सभी राजनीतिज्ञों का केवल एक लक्ष्य होना चाहिए कि वे ईश्वर की प्रतिपल अनुभूति करते रहें।

ईश्वर कौन हैं ? ईश्वर क्या हैं ?

वे सभी वस्तुएँ जिनमें अधोलिखित गुण विद्यमान हैं, उन्हें ईश्वर (परमात्मा) कहते हैं।

1. सर्वज्ञ
2. सर्वशक्तिमान
3. अमर
4. परमानन्द
5. परम शांति
6. सृजन
7. संरक्षण
8. परिवर्तन
9. साकार व निराकार

सभी राजनीतिज्ञों को उपर्युक्त गुणों की अनुभूति प्रतिपल करना चाहिए। क्रियायोग ध्यान से सरलता व सहजता में उपर्युक्त सभी गुणों की अनुभूति संभव है।

‘अखण्ड भारत सन्देश’ का उद्देश्य

‘अखण्ड भारत सन्देश’ विश्व के सभी राष्ट्रों को एक सूत्र में जोड़ने के लिए एक अद्वितीय समाचार-पत्र है, जिसका मुख्य लक्ष्य है - मूल सत्य को स्थापित करना। इस समाचार-पत्र की शाब्दिक व्याख्या से मूल सत्य स्वयं प्रकाशित हो जाता है। ‘अखण्ड’ का आशय है, अविभाज्य और ‘भारत’ का आशय है ‘भा’ से रत । भा का अभिप्राय सम्पूर्ण ज्ञान से है। भारत ज्ञान युक्तावस्था का संबोधन है जो सदैव अविभाज्य है। जब मनुष्य इस अवस्था में होता है तो उसके द्वारा दिया गया संदेश सदैव सत्य होता है।

इस समाचार-पत्र का उद्देश्य है, पूरे विश्व की ऐसी घटनाओं को प्रकाशित करना जो मानव को मानव से, राष्ट्र को राष्ट्र से, पुरुष को प्रकृति से तथा आत्मा को परमात्मा से जोड़ने में मदद करें। ‘अखण्ड भारत संदेश’ सनातन भारतीय संस्कृति ‘‘वसुधैव कुटुम्बकम्’’ की भावना का पूरे विश्व में विस्तार करेगा।

''अखण्ड भारत संदेश'' के व्यापक स्वरूप को विस्तार से समझने के लिए ''अखण्ड भारत'' शब्द पर ध्यान दें । ''अखण्ड'' अवस्था को ही योग की अवस्था कहा गया है जिसमें स्थित होने पर स्पष्ट ज्ञान हो जाता है कि दृश्य व अदृश्य जगत एक अविभाजित परम तत्व है। अखण्ड अवस्था को ही सत्य अनुभूति की अवस्था कहा गया है। क्रियायोग ध्यान के द्वारा योग अवस्था के प्रकट होने पर मनुष्य अनुभव कर लेता है कि सुख–दुःख, पाप–पुण्य, माया–ब्रह्म आदि समस्त द्वैत अनुभूतियाँ स्वप्नवत् हैं । सत्य केवल एक है अमरता, अद्वैत की अनुभूति।

''भारत'' शब्द की विस्तृत व्याख्या करने पर स्पष्ट होता है कि ''भारत'' शब्द 'भा' तथा 'रत' दो शब्दों को मिलकर बना है। 'भा' का अभिप्राय ज्ञान से है तथा 'रत' का अभिप्राय पूरी तरह से जुड़ने से है । ज्ञान तीन प्रकार का है । ब्रह्मा का ज्ञान अर्थात् सृजन करने का ज्ञान, विष्णु अर्थात् संरक्षण करने का ज्ञान तथा शिव अर्थात् परम कल्याणकारी परिवर्तन करने का ज्ञान । जब मनुष्य अपने स्वरूप को अखण्ड स्थिति में अनुभव करता है तो उसे अपना अस्तित्व ब्रह्मा (सृजन), विष्णु (संरक्षण) व शिव (परिवर्तन) में निहित पूर्ण ज्ञान तत्व के रूप में दिखाई देता है। ऐसी अवस्था में अनुभव हो जाता है कि मनुष्य का स्वरूप सर्वज्ञ तत्व है ।

अखण्ड भारत संदेश उपरोक्त वर्णित संदेश के गूढ़ रहस्य को व्यक्त करता है । जैसे–जैसे इस भाव का विस्तार होगा वैसे–वैसे भारत राष्ट्र का निर्माण होगा और राष्ट्र निर्माण की यह प्रक्रिया प्रारम्भ हो गयी है। आगे आने वाले 15 वर्षो के अन्दर भारत अपने शक्तिवान और ज्ञानवान स्वरूप में प्रकट होकर सम्पूर्ण विश्व की उच्चतम् सेवा करेगा ।

अखण्ड भारत संदेश का मुख्य लक्ष्य है, हर मानव को अपने अंदर स्थित अखण्ड ज्ञान–प्रवाह से परिचित कराना, ताकि समाज को संकीर्णता के दायरे से ऊपर उठाकर विराट विश्व का दर्शन कराया जा सके । इस समाचार-पत्र के विस्तार से समाज के सारे अंग - शिक्षा, चिकित्सा, व्यापार, राजनीति आदि के स्वरूप में युगानुकूल परिवर्तन होगा । प्रत्येक देश की शिक्षा व्यवस्था सर्वोच्च स्थान पर होगी, जिसमें शिक्षित व्यक्ति रोजगार की दृष्टि से आत्म-निर्भर होगा। मानव-मानव के बीच एकता व प्रेम का शाश्वत् सम्बन्ध स्थापित होगा। एक ऐसे समाज का निर्माण होगा जो भारतीयता, वैज्ञानिकता तथा कर्मठता व आध्यात्मिकता की शाश्वत् व संयुक्त शक्ति के जीवन्त रूप को प्रकट करेगा।

fo'k"k क्रियायोग ध्यान के अभ्यास से मनुष्य को अनुभव हो जाता है कि उसका स्वरूप और दृश्य जगत अनन्त सर्वव्यापी अदृश्य शक्ति का प्रकाश है। जिस प्रकार लहर विशाल समुद्र की अभिव्यक्ति है। लहर और समुद्र दो नही हैं। ठीक उसी तरह दृश्य जगत भी लहर के रूप में है, जो सर्वव्यापी अनन्त निराकार की अभिव्यक्ति है।

Akhand Bharat Sandesh
Aim and Objects

Its main objective is to connect all nations together and to bring the realization in the Consciousness of human beings that the whole world is One Home and that all members of the Home are Children of God, fully charged with Omniscient, Omnipotent, Immortal and Omnipresent Consciousness. The name of Akhand Bharat reveals the same meaning. Akhand means undivided. Bharat means oneness with complete knowledge. Complete knowledge is known as Omniscient, Omnipotent, Immortal and Omnipresent Consciousness. Sandesh means message. The message of Akhand Bharat Sandesh will be delivered everywhere in bilingual language (Hindi and English).

Anyone who is charged with the thought that the whole world is One Home and that each and every person of the Home is a child of God, is a perfect person to serve like a Prophet. The nature of child of God is Omniscient, Omnipotent, Immortal and Omnipresent.

It is practically observed that the joyful devoted practice of Kriyayoga Meditation brings the same realization easily and quickly. Akhand Bharat Sandesh will spread this message everywhere and has decided to light the lamp of Kriyayoga Meditation in all homes of the world. The moment this newspaper will reach all persons of the world through the print, electronic and internet media, then heaven on the earth will be observed. *Vasudhaivakutumbakam* will be celebrated by the majority of persons. *Vasudhaivakutumbakam* means the whole world is one home. This thought will automatically change all branches of education such as engineering, medical, philosophy, social science etc. Then all places of the world will become rich with all the facilities needed by human beings and thus, become most suitable to live in.

Under The Holy Banyan Tree , Shri Shri Mahavatar Babaji Prophesied the Worldwide Spread of Kriyayoga to Bring Unity Among all Nations and to Highlight the Path of Truth and Non-violence

क्रियायोग आश्रम परिसर में स्थित श्री श्री महावतार बाबाजी वटवृक्ष के नीचे मृत्युंजय अमर गुरू श्री श्री महावतार बाबाजी ने ज्ञानावतार स्वामी श्री श्री युक्तेश्वर गिरी जी को कुम्भ मेला 1894 में प्रथम दर्शन देकर उनकी कुण्डलिनी को जागृत किया था।

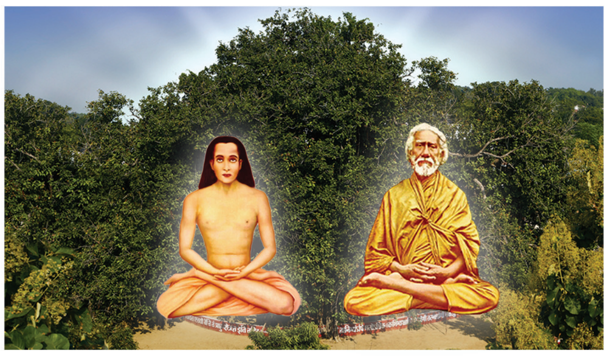

This is the sacred location at Kriyayoga Ashram & Research Institute, where Shri Shri Mahavatar Babaji blessed Swami Shree Yukteshwar ji during the Kumbha Mela in 1894, and instructed Shree Yukteshwar ji on specific Kriyayoga teachings.

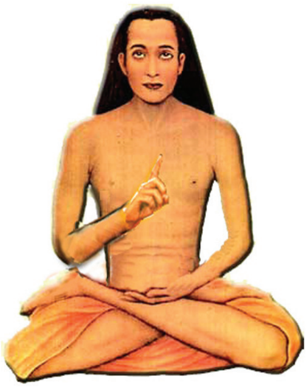

Eternal Guru Mahavatar Babaji has been chosen by God to retain his pure body from time immemorial until the end of the present Visible Universe. The imperfect human mind cannot comprehend this truth because the unawakened mental and reasoning power of the human being is incapable of penetrating into the sphere of Eternal Truth. The work of The Eternal Master is to help all creations with the plan of Universal COSMIC Law.

Gyanavatar Swami Shree Yukteshwar Giri is an example of a true disciple of Lahiri Mahasaya. He for the first time revealed clearly that the present age of the world is Ascending Dwapar Yuga and the human race is in a constant state of awakening to experience God more and more with the eternal message that God has become all – "Ekoahambahushyaami".

Melbourne Program - Australia
April 12 to 21, 2014

12th April: 6.30 PM - 8 PM
(evening ONLY)

13th April to 21st April:
Morning Class: 6.30 AM - 8.00 AM
Evening Class: 6.30 PM - 8.00 PM

For more information, visit our website:
www.Kriyayoga-YogiSatyam.org

Your Divine Help and Prayers are Needed to Support this Movement; e-mail us at AkhandBharatSandesh@gmail.com

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादकः स्वामी श्री योगी सत्यम् द्वारा भार्गव प्रेस 11/4 बाई का बाग इलाहाबाद से मुद्रित एवं क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान, नई झूँसी, इलाहाबाद 211019 उ०प्र० भारत से प्रकाशित, दूरभाष (0532) 2567243 फैक्स (0532)2567227 मोबाइल नं० 9415217278-79, 941517281, 9415235084
R.N.I. No - UPHIN/29506/24/1/2000-TC
ई-मेलः AkhandBharatSandesh@gmail.com / KriyayogaAllahabad@hotmail.com **वेबसाइटः** www.Kriyayoga-Yogisatyam.org/AkhandBharatSandesh